डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, चतुर्थ पत्र

अभिज्ञानशाकुन्तल

नायक दुष्यन्त का चरित्र चित्रण :-

'नायक' शब्द का निर्माण 'नी' धातु से हुआ है। 'नी' का अर्थ 'ले चलना' है। जो कथावस्तु को फल की ओर ले जाता है, वही नेता अथवा नायक कहलाता है। 'अभिज्ञानशाकुन्तल' नाटक का नायक दुष्यन्त है। भारतीय नाट्य शास्त्र की दृष्टि से नायक चार प्रकार का माना गया है - 1. धीरललित, 2. धीरप्रशान्त, 3. धीरोदात्त, और 4. धीरोद्धत। इनमें से दुष्यन्त 'धीरोदात्त नायक' है। धीरोदात्त का लक्षण दशरूपककार ने इस प्रकार किया है -

महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाहंकारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥

धीरोदात्त नायक को महाबली, अतिगम्भीर, क्षमाशील, अविकत्थन, स्थिरप्रकृति, अहंकारविहीन, एवं दृढसंकल्प होना चाहिए।

दुष्यन्त इन सभी गुणों से मण्डित है। वह पवित्र पुरुवंशोत्पन्न क्षत्रिय राजा है। उसकी चारित्रिक विशेषताओं को संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -

महाबली :-

शाकुन्तल में दुष्यन्त को एक रूपवान एवं बलिष्ठ युवा के रूप में चित्रित किया है। वह अत्यन्त वीर एवं पराक्रमी शासक है।

Scanned with CamScanner

"शिरिन्चर इव नागः प्राणसारं बिभर्ति" उसका साम्राज्य पृथिवी पर एकछत्र शासन है। देव, दनुज, मानव ही नहीं वरन् पशु पक्षी तथा लता वृक्ष भी उसके शासन का पालन करते हैं। राक्षसों के वध के लिए उसे धनुष पर बाण सन्धान की आवश्यकता नहीं होती, वह प्रत्यंचा की टंकार मात्र से राक्षसों से होने वाले विघ्नों को दूर कर देता है-

"का कथा बाणसन्धाने ज्याशब्देनैव दूरतः।
हुंकारेणैव धनुषः स हि विघ्नानपोहति"॥

दैत्यों से युद्ध करने के लिए स्वयं इन्द्र उसे स्वर्ग में बुलाते हैं तथा उसके पराक्रम से प्रसन्न हो अपना अर्धासन देकर स्वयं उसके गले में 'मन्दारमाला' पहनाते हैं- "मन्दारमाला हरिणा पिनद्धा"।

गम्भीर एवं विनम्र :-

अत्यन्त पराक्रमी एवं तेजस्वी होते हुए भी राजा दुष्यन्त प्रकृति से गम्भीर है। 'गम्भीर' शब्द का अर्थ है - गहन, गहरा। अर्थात् ऐसा व्यक्ति जो उत्तेजना के क्षणों में भी उत्तेजित न होकर संयम से काम लेकर औचित्यानौचित्य का विचार करता है। यथा - शकुन्तला के सौन्दर्य से आकृष्ट होकर उसके मन में उसे प्राप्त कर लेने की अभिलाषा उत्पन्न हो जाने पर भी वह संयम एवं विवेक का त्याग नहीं करता। वह उसकी सखियों से उसका वंश परिचय जानकर तथा उसे

Scanned with CamScanner

'क्षत्रपरिग्रहा' मानकर अपने हृदय को उसकी अभिलाषा करने की अनुमति देता है- "भव हृदय साभिलाषम्" क्योंकि वह अग्नि नहीं स्पर्शयोग्य रत्न थी। पंचम अंक में शार्ङ्गरव आदि तपस्वियों के आक्षेपों का उत्तर वह अति विनम्रता के साथ देता है। वह तपस्वियों तथा अन्य आदरणीय लोगों के प्रति सदैव विनयशील रहता है। मृगयाप्रेमी राजा दुष्यन्त तपोवनोचित व्यवहार को ध्यान में रखकर विनीतवेश को धारण करता है। आश्रमवासी उससे निवेदन करते हैं कि "आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यः" तो वह विनयपूर्वक अपने बाण को धनुर्ज्या से उतारकर तूणीर में रख लेता है। देवासुर संग्राम में कालनेमि की सन्तान दुर्जय नामक दानवों के विनाश के बाद प्राप्त विजय का श्रेय वह महेन्द्र को ही देता है। अपने को निमित्तमात्र मानता है। राजा के इस कथन में उसका 'अविकत्थन' स्वभाव व्यक्त होता है।

आदर्श राजा :-

नाटक में दुष्यन्त का चरित्र एक आदर्श राजा के रूप में प्रस्तुत हुआ है। वह धर्म एवं न्याय के साथ शासन करता है। उसमें त्याग की भावना पर्याप्त है। धनमित्र नामक व्यापारी की मृत्यु पर वह उसका धन उसकी गर्भस्थ संतान को दिलाता है। वह प्रजावत्सल है। प्रजा की रक्षा करना वह अपना धर्म समझता है। अपने शासनकाल में वह दुष्टों की उद्दण्डता सहन

Scanned with CamScanner

नहीं कर सकता है, वह स्पष्ट शब्दों में कहता है-
"कः पौरवे वसुमतीं शासति शासितरि दुर्विनीतानाम् ।
अयमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु" ॥
इस दृष्टि से वह पुरुवंश के गौरव का प्रतिनिधि है।
उसकी दृष्टि में प्रजा का अनुरंजन ही राजा का परम
कर्त्तव्य है- "नातिश्रमापनयनाय यथा श्रमाय ।
राज्यं स्वहस्तधृतदण्डमिवातपत्रम्" ॥

Scanned with CamScanner